S-587 Roll No. ……..

MASL–202

गद्य एवं पद्य काव्य

एम. ए. संस्कृत (एमएएसएल–12/16/17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2018

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित श्लोकों एवं गद्यांशों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) जातंवंशे भुवनविदिते पुष्करावर्त्तकानां
जानामि त्वां प्रकृति पुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामाः॥

(ख) तस्मिन् काले नयनसलिलं योषितां खण्डितानां
शान्ति नेयं प्रणयिभिरतो वर्त्म भानोस्त्यजाशु।
प्रालेयास्रं कमलवदनात्सोऽपि हर्तुं नलिन्याः
प्रत्यावृत्तस्त्वयि कररुधि स्यादल्पाभ्यसूयः॥

(ग) कदलीदल कुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परसहस्र पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रिकुल कूजित पूजित पयः पूरितं सरः आसीत्। दक्षिणतः चैको निर्झर-झर्झर ध्वनिध्वनित दिगन्तरः फलपटलाऽऽस्वाद चपलित चञ्चु पतङ्गकुलाऽऽक्रमणाधिक विनत शाख-शाखि-समूह व्याप्तः सुन्दरकन्दरः पर्वतखण्ड आसीत्।

(घ) दानवा एव च दीनानदीदलन् अभूत् केवलम् अकबरशाह-नामा यद्यपि गूढशत्रु भारतस्य तथापि शान्तिप्रियो विद्वत्प्रियश्च। अस्यैव प्रपौत्रो मूर्त्तिमदिव कलियुगः गृहीत-विग्रहः इव चाधर्मः आलमगीरोपाधिधारी अवरङ्गजीवः सम्प्रति दिल्ली वल्लभतां कलंकयति। अस्यैव पताका केकयेषु, मत्स्येषु, मगधेषु, अङ्गेषु बङ्गेषु कलिङ्गेषु च दोधूयन्ते। केवलं दक्षिण देशेऽधुनाप्यस्य परिपूर्णो नाधिकारः संवृतः।

2. खण्डकाव्य की दृष्टि से 'मेघदूत' का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

3. 'शिवराजविजय' की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की समीक्षा कीजिए।
4. कालिदास प्रकृतिप्रेमी कवि हैं। 'मेघदूत' के आलोक में प्रकाश डालिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. पूर्वमेघ के आधार पर कुबेर द्वारा शापित यक्ष की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए।
2. 'कामार्ता हि प्रकृति कृपणाः चेतनाचेतनेषु' सूक्ति की व्याख्या कीजिए।
3. 'कालिदास प्रेम एवं श्रृंगार के सिद्धहस्त कवि हैं।' सिद्ध कीजिए।
4. "रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय" सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
5. 'शिवराजविजय' के आरम्भ में वर्णित सूर्योदय का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
6. "भवादृशै न ज्ञायते कालवेगः" उक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
7. अम्बिकादत्त व्यास आधुनिक 'बाण' हैं। सिद्ध कीजिए।
8. गद्यकाव्य के भेदों का वर्णन करते हुए 'शिवराजविजय' का महत्व बताइए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'मेघदूत' में वर्णित उज्जयिनी नगरी किस प्रदेश में स्थित है ?
   (क) छत्तीसगढ़
   (ख) मध्य प्रदेश
   (ग) गुजरात
   (घ) राजस्थान

2. मेघ ने अपनी यात्रा कहाँ से प्रारम्भ की ?
   (क) रामगिरि से
   (ख) पूर्णागिरि से
   (ग) केशवगिरि से
   (घ) हिमगिरि से

3. 'शिवराजविजय' किस विधा का ग्रन्थ है ?
   (क) नाट्य का
   (ख) उपन्यास (कथा) का
   (ग) खण्ड काव्य का
   (घ) इनमें से कोई नहीं

4. घटिका शतक किसे कहा जाता है ?
   (क) दण्डी को

(ख) सुबन्धु को

(ग) बाण को

(घ) अम्बिकादत्त व्यास को

5. चिररात्राय 'सुप्तोऽहम्' यह कथन किसका है ?

(क) श्यामसिंह का

(ख) गौरसिंह का

(ग) शिवाजी का

(घ) आश्रम मुनि का

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सत्य/असत्य लिखकर दीजिए –

6. यक्ष को शाप कुबेर ने दिया था। (सत्य/असत्य)

7. यक्ष की प्रिया शिवपुरी में रहती है। (सत्य/असत्य)

8. 'रघुवंश' बाणभट्ट की रचना है। (सत्य/असत्य)

9. 'शिवराजविजय' के नायक छत्रपति शिवाजी हैं। (सत्य/असत्य)

10. 'शिवराजविजय' नाटिका है। (सत्य/असत्य)